1. **वार्तालाप /बातचीत /संवाद –**

बीरबहूटियाँ खोजते समय साहिल और बेला के बीच वार्तालाप

साहिल और बेला के बीच वार्तालाप

बेला : जल्दी चलो साहिल , हमें बीरबहूटियाँ खोजना है न ?
साहिल : हाँ चलो ।
बेला : पेड–पौधे सब गीले है ।
साहिल : बारिश अभी–अभी खतम हुई है ।
बेला : साहिल , खेतों में देखो बीरबहूटियाँ ।
साहिल : इसका रंग तुमारे रिबन के जैसा लाल है ।
बेला : हाँ , खून की प्यारी– प्यारी बूँदें जैसी है ।
साहिल : क्या तुमने कुछ सुना बेला ?
बेला : हाँ , स्कूल में पहली घंटी लग गयी है ।
साहिल : लेकिन मुझे पैन में स्याही भी भरवानी है दुकान से ।
बेला : अरे तुमने पहले क्यों नहीं बताया ?
साहिल : भूल गया था । जल्दी चलो ।

**2. पटकथा –**

नई स्याही भरवाने केलिए साहिल और बेला दुकान पर पहूँचे । इस घटना के आधार पर पटकथा का एक अंश तैयार करें ।

**पटकथा**

दृश्य – 1
स्थान – फुलेरा जंक्शन की एक दुकान
समय – सुबह 9.45 बजे
पात्र – साहिल, बेला और दुकानवाले भैया
उम्र – साहिल और बेला–लगभग 10 साल, भैया–50 साल
वेश–भूषा – साहिल और बेला– स्कूली वर्दी
दुकानवाले भैया – धोती और कुर्ता

दृश्य विवरण– फुलेरा जंक्शन की एक तंग गली । गली में बहुत सारी दुकानें हैं । एक स्टेशनरी की दुकान के आगे दो स्कूली बच्चे खडे हैं । दुकान में दुकानवाले भैया है । बेला भैया से पूछती है – (संवाद)

बेला : एक पैन स्याही भर दीजिए ।
दुकानवाले भैया : स्याही का बोतल अभी–अभी खाली हो गई है । कल मिलेगी ।
बेला :इसने पैन में जो स्याही थी उसे जमीन पर छिडक दिया ।
दुकानवाले भैया : बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना है। कौन–सी में पढते हो ?
साहिल :(बुरे मन से ) पाँचवीं में ।
दुकानवाले भैया : दोनों ?
बेला : (खुशी के साथ ) हाँ, और हमारा सेक्शन भी एक है –ए ।

( दोनों चले जाते है )

दृश्य समाप्त

**3. डायरी–**

एक दिन सुरेंदर जी माटसाब ने बेला के बालों में पंजा फँसाया । बेला को बहुत दुख हुआ । उस दिन की बेला की डायरी तैयार करें ।

**बेला की डायरी**

25 जून 1981

बुधवार

आज का दिन मैं कभी भूल नहीं सकती । आज मुझे इतना दुख हुआ कि मैं बता नहीं सकती । मैंने कभी नहीं सोचा था कि माटसाब ऐसा करेंगे । हमेशा की तरह वे आज भी काँपी जाँच रहे थे ।मेरी बारी आयी । जरा सी गलती देखकर उन्होंने मेरे बालों में पंजा फँसाया । पर शायद जिस गलती को पाकर वे मेरे बाल पकडकर फेंकनेवाले थे , वह गलती थी ही नहीं । उन्होंने मुझे छोड दिया ।मेरे भयभीत चेहरे को देखकर साहिल डर गया था । उस समय मेरे पाँव काँप रहे थे । मुझे लगा कि मैं गिर जाऊँगी । माटसाब ने मेरी काँपी को फेंकते हुए अपनी जगह पर बैठने को कहा । मेरा मन बहुत खराब हो गया । मुझे बहुत दुख हुआ। माटसाब चाहे मुझे पीट लेते मगर साहिल के सामने नहीं । क्योंकि उसके सामने मैं शर्मिंदा महसूस कर रही हूँ । साहिल के सामने मुझे अच्छी लडकी बननी है।

मैं साहिल के पास जाकर बैठी, लेकिन शर्म के कारण उससे नजर नहीं मिला पाई। घर आकर मैंने सारी बातें माँ से बताया । माँ ने मेरी सांत्वना की। मैं यह घटना भूलने की कोशिश कर रही हूँ । हे भगवान ! आइंदा स्कूल में ऐसी बातें न हो ।

**4. पत्र /चिट्ठी/खत**

अब साहिल और बेला अलग–अलग स्कूल में पढ रहे हैं । साहिल अजमेर के एक स्कूल में और बेला फुलेरा के एक राजकीय कन्या पाठशाला में । अपनी पढाई की बातें बताते हुए बेला ने साहिल को एक पत्र लिखा । बेला का पत्र तैयार कीजिए ।

**बेला का पत्र**

फुलेरा जंक्शन
10 जून 1982

प्रिय दोस्त साहिल ,

कितने दिन हुए तुम्हें देखकर । कैसे हो तुम ? माँ–बाप कैसे हैं ? आशा करता हूँ कि सब कुशल हैं । खासकर तुम्हारे बारे में जानने के लिए मैं यह पत्र लिख रही हूँ ।

तुम जानते हो न अब मैं यहाँ के राजकीय कन्या पाठशाला में पढ रही हूँ । पढाई तो अच्छी तरह से चल रही है । लेकिन क्या बताऊँ ...पहले जैसे खुशी नहीं है । तुम मेरे साथ नहीं हो साहिल, इसलिए अब बीरबहूटी भी नहीं खोजती। तुम जैसे दोस्त भी अब नहीं है । एसे लग रही हूँ कि तुम्हारे बिना जीवन अधूरी है ।

तुम जरूर मुझे चिट्ठी लिखो । तुम्हारी खबर जानने की बहुत इच्छा है। तुम्हारी पढाई कैसी चल रही है ? अपने दोस्त और होस्टल के बारे में जरूर लिखना । क्या तुम कभी फुलेरा में आए थे ? आते समय मुझे खबर दो । तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में .....

तुम्हारी प्रिय मित्र
बेला
(हस्ताक्षर)

सेवा में .....
नाम
पता

## 5. कविता का आशय /की टिप्पणी

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था – कविता की टिप्पणी तैयार कीजिए ।

### सहायता–मनुष्यता की पहचान

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि श्री विनोदकुमार शुक्ल की एक सुंदर कविता है हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था । श्री विनोदकुमार शुक्ल अपनी मौलिकता के साथ ही भाषा की अनगढता केलिए विख्याद है । इस कविता में वे जानना शब्द के सही और रूढिग्रस्त अर्थ को समझाने की कोशिश कर रहे हैं । कवि कहते है कि